R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015 ISSN 2454-5902

वर्ष 1 अंक 2 दिसम्बर 2015

शोध सिन्धु

अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सिंह
प्रधान सम्पादक

डॉ0 अनीता सिंह
सम्पादक

डॉ0 मुकेश कुमार मिश्र
सह सम्पादक

Year 1 Vol. 2 December 2015

SHODH SINDHU

Half Yearly Research Journal

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ।।

- श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 3, श्लोक 8

शब्द सिन्धु
वर्ष 1, अंक 2, दिसम्बर 2015
R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015
ISSN 2454-5902

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से —

आधुनिक अवधी काव्य में व्यक्तित्ववादिता का स्वर 1

डॉ॰ मनोज कुमार, पहितीपुर रोड, (फतेहपुर पकड़ी) शाहजादपुर, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर (उ0प्र0)

वैदिक एवं आधुनिक प्राणी विज्ञान 4

डॉ॰ मनु सिंह, चौरी चौरा गोरखपुर (उ0प्र0)

अभिव्यंजना–शिल्प का अर्थ 11

सुप्रिया मिश्रा, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ0प्र0)

पाणिनीय शिक्षा में वर्णों का शुद्ध उच्चारण 18

कौशिकी राय, शोध–छात्रा, संस्कृत विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0)

उद्योग और समाज की प्रतिक्रिया 22

डॉ॰ करुणा शंकर पाण्डेय, सह अनुसंधानकर्ता भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण उत्तर पश्चिम क्षेत्रीय केन्द्र (संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार) देहरादून (उत्तराखण्ड)

वेदों में प्रतिपादित औषधियों का परिचय 27

कुन्नु श्रीवास्तव, शोध–छात्रा, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उ0प्र0)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मिथक 32

डॉ॰ अर्चना गुप्ता, प्रवक्ता, इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप महिला पी.जी. कॉलेज रामदत्तपुर, गोरखपुर (उ0प्र0)

न्यायिक सक्रियता एवं दलित 36

डॉ॰ गोपाल प्रसाद, उपाचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, (उ0प्र0)

मीना राहुल, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, प्रताप विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान (उ0प्र0)

डॉ॰ नागेन्द्र कुमार, प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, इण्टर कॉलेज, क्युनपुरकलां, देवरिया (उ0प्र0)

राष्ट्रीय सुरक्षा सांघातिक भारत की वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था 41

डॉ॰ अरविन्द कुमार सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, शिव सावित्री महाविद्यालय, रुदौली, फैजाबाद (उ0प्र0)

आलोक कुमार श्रीवास्तव, शोध–छात्र, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

धर्मनिरपेक्षता की बाधा : धार्मिक एवं समाजिक असहिष्णुता 48

डॉ॰ बीरेन्द्र प्रताप, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, हर्रैया–बस्ती (उ0प्र0)

नयी शिक्षा नीति – 1986 तथा महात्मागाँधी की सर्वोदय शिक्षा : एक तुलनात्मक अध्ययन 51

डॉ॰ रंजना पाण्डेय, प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, जानकी प्रसाद मेमोरियल महिला पी0जी0 कालेज, कोटवा सडक, बाराबंकी (उ0प्र0)

महर्षि पतञ्जलि और योग पाश्चात्य सन्दर्भ में 54

डॉ॰ रीता तिवारी, वरिष्ठ प्रवक्ता, संस्कृत विभाग, ए0पी0एन0पी0जी0 कालेज, बस्ती (उ0प्र0)

सतीश कुमार श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी, स्नातकोत्तर दूरस्थ शिक्षा एवं रिसर्च संस्थान दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा त्यागराज नगर, मद्रास–17

भारत की केन्द्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका 124

नीलिमा सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, पथरदेवा, देवरिया (उ0प्र0)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन 128

सौरभ पाल, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, आर0आर0पी0जी0 कालेज, अमेठी (उ0प्र0)

डॉ0 राधेश्याम प्रसाद, रीडर, शिक्षा शास्त्र विभाग, आर0आर0पी0जी0 कालेज, अमेठी (उ0प्र0)

गज़ल और तगज़्जुल 132

डॉ0 चन्द्र प्रकाश पाण्डेय, प्रवक्ता उर्दू विभाग, राजा कान्ह पी0जी0 कालेज, जगेसरगंज, अमेठी (उ0प्र0)

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में अस्तित्ववाद 135

डॉ0 सुमन कुमार शर्मा, वरिष्ठतम व्याख्याता : राजनीति विज्ञान, उच्च शिक्षा विभाग, राजस्थान सम्बद्ध : कल्याण राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान

असंलक्ष्यक्रमव्यंग्य या रसादि ध्वनि एक अध्ययन : मालविकाग्निमित्रम् के परिप्रेक्ष्य में 139

डॉ0 सतीश कुमार शुक्ल, असि. प्रोफेसर, संस्कृत, गाँधी शान्तिनिकेतन डिग्री कालेज, गौहनिया, इलाहाबाद (उ0प्र0)

बौद्ध साहित्य और नैतिक शिक्षा 144

डॉ0 सत्यनाम, वरिष्ठ प्रवक्ता – बी0एड् विभाग, वाई0डी0पी0जी0 कालेज, लखीमपुर खीरी (उ0प्र0)

वार्ता व्यवस्था – पौराणिक सन्दर्भ में 148

डॉ0 आशाराम, प्रवक्ता, संस्कृत, मा0 प्र0 त्रि0 राजकीय महाविद्यालय, खलीलाबाद, सन्त कबीर नगर (उ0प्र0)

आधुनिक भारतीय न्याय व्यवस्था : एक ऐतिहासिक विवेचन 152

डॉ0 अजय सिंह, एसो0 प्रोफेसर, राज0 शास्त्र, हण्डिया पी0जी0 कालेज, हण्डिया, इलाहाबाद (उ0प्र0)

भारत में धर्मनिरपेक्षता की संस्कृति 156

डॉ धर्मेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव, प्रवक्ता , राजनीतिशास्त्र विभाग, श्री म.रा.दा. स्ना महा भुड़कुड़ा, गाजीपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 अजय सिंह, एसो0 प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, हण्डिया पी जी कालेज हण्डिया, इलाहाबाद (उ0प्र0)

वैदेही वनवास की नवीन उद्भावनाएं 161

पूर्णिमा निवासन, शोध छात्रा, हिन्दी, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई

डॉ0 पी. नजीम् बेगम, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, टी नगर, चेन्नई

भारतीय समाज में लोक–विश्वासों का अध्ययन 165

पूर्णिमा कुमारी, शोध छात्रा, समाजशास्त्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ0प्र0)

चुप नहीं है ईश्वर–पुस्तक समीक्षा 175

डॉ0 मुकेश कुमार मिश्र, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, राजा कान्ह पी0जी0 कालेज, जगेसरगंज, जगदीशपुर, अमेठी (उ0प्र0)

R.N.I. UPBIL 04509/15/01/2015
ISSN 2454-5902

अंक 2, दिसम्बर 2015

वैदेही वनवास की नवीन उद्‌भावनाएं

पूर्णिमा निवासन*
डॉ0 पी. नजीम् बेगम**

हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का विरह–काव्य द्विवेदी युग से ही प्रारम्भ होता है। उस युग के प्रायः सभी कवियों की रचनाओं में विरह व्यथा प्राप्त होने पर भी विरह वर्णन में नवीनता, विशदता व गंभीरता युक्त कलात्मक गुरुता एवं भाषा सौष्ठव की दृष्टि से, हिन्दी विरह काव्य को अमरत्व प्रदान कवियों में महा कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', इस युग के सूर माने जाते हैं। इनके विरह वर्णनों पर समाज के प्रति साहित्य की जागरूकता, की प्रेरणा छाई हुई है। जो मात्र प्रिया तक ही आबद्ध न होकर, माता–पिता, सखा–सखी, मातृभूमि, वंधु आदि तक विस्तृत है। अपने कलेवर में समाज के प्रति तपका भाव भी अंतर्भूत किए हैं। कला की दृष्टि से यह प्रवृत्ति कुछ छूटने वाला होने पर भी यह नैतिक मूल्यों से भरपूर हैं। यहाँ विरह की अभिव्यक्ति उत्कृष्ट व आदर्शवाद से जुटेल है, यथा प्रिय प्रवास व वैदेही वनवास।

उक्त आलेख में हम वैदेही वनवास काव्य में, आदर्शवाद व नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु कवि द्वारा मूल कथ्य में निर्मित अभिनव उक्ति, अभिव्यक्ति व उद्‌भावनाओं के बारे में देखेंगे। 'वैदेही वनवास' से तात्पर्य सीता का परित्याग है। हरिऔध जी ने राम व सीता के उत्तरार्द्ध जीवन को नवीन ढंग से प्रस्तुत किए हैं। परम्परागत धारणा के अनुसार, वैदेही वनवास, सीता–परित्याग में निहित है। पर कवि के अनुसार, लोकहित के लिए राम ने सीता की वन निवास की इच्छा व्यक्त करते हैं, जिसे लोकहित व प्रजारंजन हेतु सीता स्वयं स्वीकार करती है। इस दृष्टि से काव्य का शीर्षक भी परम्परा से हटकर युगानुरूप सार्थक है।

वैदेही वनवास के कथानक में 18 सर्गों का विस्तार है। प्रारम्भ के 4 सर्गों में दुर्मुख के द्वारा अवधवासियों में सीता के चरित्र के प्रति असंतोष की भावना जानकर, राम का चिन्तित होना, भाईयों के साथ मंत्रणा करना व विशेष्ट से परामर्श करने का वर्णन हुआ है। इसके बाद 3 सर्गों में सीता का अवध परित्याग, बाद के सर्गों में वाल्मीकि आश्रम में सीता का आगमन, अवध की स्थिति, राम की विरह दशा, सीता के वेदनापूर्ण विरह निवेदन, आश्रम में शत्रुघ्न का आगमन, लव–कुश के जन्म, नामकरण, सत्यवती के लवकुश प्रेम, आत्रेई के शुभ वचनों, सत्यत्य जीवन की दिव्यता के प्रकाश में सीता के प्रति प्रेम की झाँकी, उनके लवकुश के प्रति पुत्र प्रेम तथा उन्हें अच्छे–अच्छे उपदेश, मार्गदर्शन देकर, उन्हें विभिन्न कलाओं, विशेषतः संगीत का अभ्यास देना, शत्रुघ्न का वाल्मीकि आश्रम में पुनरागमन तथा अवध में आयोजित अश्वमेध का समाचार सुनाना, शंबूक प्रकरण के परिदृश्य में राम का पंचवटी पहुँचना, अतीत स्मृति की वेदना में विभोर होना, वनदेवी में वार्तालाप तथा सीता का स्वर्णारोहरण वर्णित है।

रूढ़िगत, परम्परागत लक्ष्णों से परे यह काव्य में प्रयुक्त युगानुरूप नवीन युक्तियों को यहाँ देखेंगे। सीता परित्याग का सम्पूर्ण विस्तृत कथा, मात्र बाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है। हरिऔध ने अपनी सर्जनात्मकता का मूल सूत्र वाल्मीकि से ग्रहण करने पर भी, सम्पूर्ण कथानक में परम्परा की रक्षा करते हुए पर्याप्त नवीनता को अपनाए हैं।

*शोध छात्रा, हिन्दी, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई
**एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, टी नगर, चेन्नई

इस कृति के सृजन में कवि की व्यक्तिगत मानसिक स्थिति कार्य कर रही है। डॉ. मुकुंद देव शर्मा ने इसे स्पष्ट किया हैं कि "एक अंग्रेज कलक्टर के इतना कहने पर कि तुम जिसे मर्यादा पुरूषोत्तम राम मानते हो, मैं तो उसे एक सामान्य पुरूष भी नहीं मानता, जिसने अपने गर्भवती स्त्री को निरपराध होने पर भी जंगल में निर्वासित कर दिया। क्या कोई ईश्वर इस प्रकार का अन्याय कर सकता है? कवि ने अपने आराध्य राम के प्रति इस लांछन को धोने के लिए 'वैदेही वनवास' की सृष्टि कर, उसमें तदनुरूप सफल परिवर्तन–परिवर्धन किया। राम के उक्त चरित्र दोष के प्रक्षालन में कवि ने मूल कथानक में किए मार्मिक उद्भावनाएं निम्नांकित हैं–

1. उपवन में राम–सीता का वार्तालाप प्रसंग–

'वैदेही वनवास' काव्य के इस प्रथम सर्ग में राम–सीता के वार्तालाप में कवि लोकादर्श एवं भावी घटना की सूचना देते हैं कि व्यक्ति को लोकहित हेतु, किसी प्रकार की आत्मबलि देनी पड़ती है, जिससे वह पुण्य का भागी होता है। परम्परागत रामकथा में यह प्रसंग नहीं है।

2. लोकापवाद व उसकी सूचना–

वाल्मीकि रामायण में जब राम अपने मित्रों से राज्य की कुधारणाओं के बारे में पूछते हैं तो उनके मित्रों में से भद्रक ने, सीता का लोकापवाद व्यक्ति करते हैं। सीता राक्षसों के वश में, अशोक वाटिका में बहुत दिनों के रहने पर भी, राम सीता, से घृणा क्यों नहीं करते? अब हम लोगों को भी स्त्रियों की ऐसी बाते सहनी पड़ेंगी, क्योंकि राजा का अनुकरण प्रजा को करनी चाहिए।

'वैदेही वनवास' में एक रजक अपने पत्नी को द्वार पर रोककर उसके रात भर कहीं बिताने का कारण पूछकर करते हैं कि तुमने भारी भूल की। क्या तुम मुझे राम समझती है, जो पर गृह में अपनी पत्नी रहने पर भी, उन्हें अपनाया? इस लोकापवाद की सूचना एक गुप्तचर द्वारा स्वयं राम की सुनायी जाती है। अतः कवि ने आधुनिक राज्य की क्रियाकलापों, विश्वासों के आधार पर इस प्रयोग में बुद्धि संगत परिवर्तन अपनाया है।

3. मंत्रणा प्रसंग–

रामायण में लोकापवाद को सुनकर, श्रीराम अंतरात्मा में सीता को विशुद्ध समझने पर भी चिन्ताकुल होकर, अपने भाईयों को बुलाकर लोकापवाद का विषय बताते हैं तथा अपने भाईयों की एक बात भी सुने बिना अपना निर्णय सुनाते हैं। सीता के इच्छानुसार की वह गंगातट पर ऋषियों के आश्रम देखना चाहती है, उसी के आधार पर सीता से बताए बिना राम ने सीता को वन में छोड़ने की आज्ञा लक्ष्मण को देते हैं तथा लक्ष्मण उसका पालन करते हैं। 'वैदेही वनवास' में, राम, लोकापवाद के विषय में परस्पर भाईयों से मंत्रणा करते हैं। भरत, श्रीराम को सात्वना देते हैं, लक्ष्मण क्रोध पूर्वक लोकापवाद करने वालों का दलन करना चाहते हैं। शत्रुघ्न ने लवणासुर प्रसंग चर्चा कर, दंड देने की बात कहते हैं। किन्तु रामजी ने, रावण–युद्ध की बाल–बृद्धों की करूण व्यथा को स्मरण कर, अहिंसा को अपनाकर, समनीति से, स्वयं को कष्ट देकर लोकहित व प्रजारंजन करने का निर्णय सुनाते हैं।

4. राम के गुरु वशिष्ठाश्रम जाकर सलाह लेना–

परम्परागत राम कथा में, यह प्रसंग नहीं है। वैदेही वनवास' में श्रीराम ने, लोकापवाद एवं सामनीति के आधार पर सीता को वन भेजने की इच्छा व्यक्त करते हैं। गुरु वशिष्ठ ने पुरानी प्रथानुकूल, गर्भवती सीता को वाल्मीकि आश्रम में पहुँचाकर कार्यसिद्धि तथा सीता परित्याग की बात राजमहल तक रह जाने की सुझाव देते

हैं।

5. राम का सीता के सम्मुख लोकापवाद व वाल्मीकि आश्रम जाने का प्रस्ताव–

परम्परागत कथानुसार, राम की आज्ञा से लक्ष्मण सीता को रोती, विलखती हुई बाल्मीकि आश्रम के पास छोड़ देते हैं। मुनिकुमारों की सूचना से एवं योग द्वारा सीता के परित्याग का कारण व उनकी उपस्थिति जानकर, वाल्मीकि स्वयं सीता को आश्रम में लाकर, तपस्विनियों की देख–रेख में रख देते हैं। सीता, राम के वंशज की रक्षा हेतु स्वयं को गंगा में भी अर्पित नहीं करती।

'वैदेहीवनवास' में रामचन्द्र सीता को लोकहित की रक्षा हेतु वाल्मीकि आश्रम में जाने का प्रस्ताव रखते हैं तो सीता सहर्ष उसे स्वीकारती हैं। कहती हैं कि लोकाराधना व प्रभु आराधना के निमित्त सब छोड़ूँगी। अंत में किसी को कुत्सित विचार न हो ऐसा सोचकर राम ने सीता को, वाल्मीकि आश्रम भेजने को कहते हैं। सीता चकोरी की भाँति राम का मुँह देखती रह जाती है।

6. सीता विदाई प्रसंग–

परम्परागत रामकथा में सीता की इच्छानुसार, वन में मुनियों के आश्रम देखने के लिए भेजा जा रहा है। 'वैदेही वनवास' में यह मंगल यात्रा के रूप में परिणत हो जाता है। यद्यपि सीता–राम के परिवार जन दुःख होने पर भी, उसका प्रदर्शन नहीं करते ताकि महल से बाहर, लोग इसका गलत अर्थ न निकालें।

7. लक्ष्मण के साथ सीता वन–गमन प्रसंग–

वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण विह्वल हृदय से भीतर ही भीतर बात छिपाकर, सीता को वन छोडने जाते हैं। 'वैदेही वनवास' में लक्ष्मण व सीता दोनों वस्तुस्थिति से अवगत हैं। सीता अपने कर्त्तव्यों एवं त्याग की विवेचना करती है, जिससे लक्ष्मण सांत्वना पाता है।

8. वाल्मीकि आश्रम में सीता का स्वागत–

परम्परागत राम कथा में यह प्रसंग नहीं है। 'वैदेही वनवास' में लक्ष्मण–सीता को मुनि श्रेष्ठ अभिनन्दन करते हुए, उनका उचित स्वागत करते हैं। क्योंकि सीता आगमन के बारे में, कुछ गुरु वशिष्ट, वाल्मीकि को पत्र भेजते हैं ताकि सीता के स्वागत व वास का सही–उचित प्रबंध तत्काल हो जाए। पत्र भेजने की यह क्रिया आधुनिकता का बोध कराती है।

9. सीता को आश्रम में पहुचाकर लक्ष्मण द्वारा राम को सीता सम्बन्धी वृत्तांत सुनाना–

यह प्रसंग हरिऔध जी की मौलिक व नवीन उद्भावना है। परम्परागत रामकथा में लक्ष्मण सीता को रोती हुई छोड़कर आ गए थे। दुखित राम को संसार के सभी सचित्रों से विमुख होने को कहते हैं। वे राम को सभी से विमुक्त होकर, निरत होने को कहते हैं तथा अपने दुःख को भी छिपाने का सलाह देते हैं ताकि कहीं फिर से अपवाद न आ जाए। 'वैदेही वनवास' में, लक्ष्मण दुखित राम से, सीता को आश्रम सकुशल पहुँचाने की बात तथा आश्रम में उनकी स्वागत की बात बताते हैं।

10. लव–कुश एवं शत्रुघ्न आगमन प्रसंग–

लव–कुश प्रसंग, वाल्मीकि रामायण में जिस दिन शत्रुघ्न वाल्मीकि आश्रम में अनजाने ही विश्राम करते हैं,

उसी रात्रि में लव–कुश के जन्म के बाद, वृद्ध स्त्रियों द्वारा बालकों के मार्जन एवं संरक्षण के लिए सीता के नाम और गोत्र के उच्चारण से, उन्हें लव–कुश के जन्म का समाचार प्राप्त होता है। 'वैदेही वनवास' में लव–कुश का जन्म, उसी दिन होता है, जब शत्रुघ्न लवणासुर को मारने के लिए जाते समय, मार्ग में सीता से मिलकर चले जाते हैं।

परम्परागत राम कथा में, लव–कुश द्वारा अश्वमेध यज्ञ में रामायण गान करने पर, सीता के पुत्रों के रूप में राम उन्हें पहचानते हैं। लव–कुश द्वारा अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ने, शत्रुघ्न के साथ युद्ध, लव का मूर्छित होना, सीता से कुश का युद्ध वर्णन, अश्व के साथ अयोध्या आना, श्रीराम का वाल्मीकि आश्रम जाना, वस्तुस्थिति का ज्ञान होना, इस प्रकार लव–कुश कुछ अधिक क्रियाशील हैं। जबकि 'वैदेही वनवास' में शत्रुघ्न का आगमन वाल्मीकि आश्रम में 12 वर्ष के पश्चात होता है, जब लव–कुश, शस्त्र–शास्त्र में निपुण होकर, विशेषतः संगीत में तथा रामायण गा रहे हैं, शत्रुघ्न, लवणासुर वध व लोकशक्ति की सूचना देते हैं। इसके पश्चात लव–कुश का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है।

11. राम–सीता मिलन प्रसंग–

वाल्मीकि रामायण में सीता–राम के मिलन के साथ, सीता अपनी शुद्धता की साक्षी देते हुए रसातल में प्रविष्ट होती है। 'वैदेही वनवास' में न तो सीता का रसातल में प्रवेश होता है न राम से लौकिक मिलन, अपितु वे अलौकिक ज्योति में परिणत हो जाती है।

12. अन्य मौलक प्रसंग–

सीता का चाँदनी से विरह निवेदन, आत्रेयी द्वारा सीता के विगत जीवन पर प्रकाश, सीता द्वरा विज्ञानवती को दाम्पत्य के आदर्श का स्पष्टीकरण, राम व वनदेवी का वार्तालाप, शंबूकवध आदि प्रसंग मौलिक, काल्पनिक व परिवर्द्धित उद्भावनाएं हैं। हरिऔध जी की कृति आधुनिक युग की है। अतः बुद्धिवादी दृष्टिकोण से, राम के चरित्र को प्रक्षालन करने का सफल प्रयत्न किए हैं। यदि सीता को भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानते हैं तो विज्ञानवती को वर्तमान समय की प्रतिनिधि मानते हैं।

सीता परित्याग के लिए मात्र लोकापवाद की सहायता लेते हैं। बल्कि राम की महानता की स्थापना हेतु राजनैतिक कारणों की परिकल्पना करते हैं। अतः सिन्धु पार गंधर्वों के दुराचार को शांत करने के लिए, कैकय नरेश ने उनका दमन किया, जिसके संचालक भरत रहे। अतः कुपित गंधर्व, सीता के विरूद्ध ऐसी अफवाह फैलाते हैं। दूसरे कारण के रूप में मथुरा मंडल के लवणासुर का उल्लेख करते हैं। अतः इस राजनीतिक चक्रव्यूह में विवश होकर ही राम सीता को वनवास देते हैं। अतः बुद्धिवादी दृष्टिकोण को अपनाकर, युगों से रहे राम के चरित्र का लांछन, हरिऔध जी के क्रांतिकारी परिवर्तन से निश्चित ही दूर करने में समर्थ रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा, डा0 मुकन्ददेव–हरिऔध और उनका साहित्य पृ0–424–425, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी–1 सवत्–2013